JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की औद्योगिक नीतियों में चुनौतियों का अध्ययन–विश्लेषण

डॉ. मोहन सिंह गुर्जर
सहा. प्रा. (अर्थशास्त्र)
शा. कुसुम महाविद्यालय
सिवनी मालवा (म.प्र.)

श्रीमती गीता डोंगरे
अतिथि विद्वान (अर्थशास्त्र)
शा. कुसुम महाविद्यालय
सिवनी मालवा (म.प्र.)

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् से ही हमारे योजनाकारों ने देश में उद्योगों के विकास हेतु औद्योगिक नीति के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया और समय–समय पर देश में औद्योगिक नीतियों के माध्यम से उद्योगों का विकास भी होता रहा। हाल ही में केन्द्रीय वाणिज्य मंत्रालय ने वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति को बदलने के लिये नवीन औद्योगिक नीति– 2023 का मसौदा जारी किया था, जिसके कार्यान्वयन पर फिलहाल रोक लगा दी गई है। वर्ष 1948 और वर्ष 1991 के पश्चात् यह देश की तीसरी औद्योगिक नीति होती। हालांकि वर्ष 1956, 1977 और 1980 में भी औद्योगिक नीति में कई संशोधन किये गये थे।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य देश के औद्योगिक विकास के निर्माण में औद्योगिक नीतियों की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना तथा विकसित देशें से प्रतिस्पर्धा करने हेतु एक नवीन औद्योगिक नीति के निर्माण की आवश्यकता एवं उसमें निहित महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करना है।

शब्द कुंजी – औद्योगिक नीति की आवश्यकता, औद्योगिक नीतियों की पृष्ठभूमि, चुनौतियां, वर्तमान परिदृश्य में नवीन औद्योगिक नीति की आवश्यकता, संभावनाएं एवं सुझाव।

भारत की नवीन औद्योगिक नीति मुख्य रूप से कोविड–19 महामारी के कारण आर्थिक गतिविधियों में व्यवधान तथा आपूर्ति श्रंखला में व्यवधान के कारण बाधित हुई है। नवीन औद्योगिक नीति– 2023 पर विगत् तीन वर्षों से काम चल रहा था। इस नीति में कुछ और सुधारों अथवा प्रयासों की आवश्यकता तथा कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों की संभावना ने इसे कुछ समय के लिये बाधित किया है तथा अपेक्षा की जा रही है कि कुछ सुधार और संशोधनों के पश्चात् इसे लागू किया जा सकेगा।

भारत में औद्योगिक नीतियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

भारत के योजनाकारों ने देश के औद्योगिक विकास को प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण माना है। भारत की पहली औद्योगिक नीति का संकल्प देश की स्वतंत्रता के पश्चात् वर्ष 1948 में ही जारी कर दिया गया था। इसके पश्चात् भी समय–समय पर आवश्यकता प्रतीत होने पर इस नीति में संशोधन किया जाता रहा और वर्ष 1980 तथा वर्ष 1991 में नवीन औद्योगिक नीतियों का निर्माण भी किया गया। इन सभी नीतियों में देश के आर्थिक विकास का लक्ष्य हमेशा शीर्ष पर रहा।इन सभी नीतियों में चुनौतियां भी हमेशा विद्यमान रहीं, किन्तु देश ने इन सभी चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना भी किया। भारत की औद्योगिक नीतियों की संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निम्न प्रकार है –

(अ) औद्योगिक नीति संकल्प, 1948 –

वर्ष 1948 में देश में औद्योगिक नीति संकल्प–1948 जारी किया गया था, जिसे चार क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया था –

1. सामरिक उद्योग –

यह उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आते थे। इन पर केन्द्र सरकार का एकाधिकार था। इनमें हथियार, गोला बारूद, परमाणु ऊर्जा और रेल तथा हवाई परिवहन शामिल थे।

2. बुनियादी उद्योग –

यह उद्योग सार्वजनिक–सह–निजी क्षेत्र के अंतर्गत आते थे। इन उद्योगों की स्थापना केन्द्र सरकार द्वारा की जाना थी। इनमें कोयला, लोहा और इस्पात,विमान निर्माण, जहाज निर्माण, टेलीफोन, टेलीग्राफ और वायरलेस उपकरणों का निर्माण और खनिज तेल शामिल थे।

3. महत्वपूर्ण उद्योग –

यह उद्योग निजी क्षेत्र द्वारा नियंत्रित थे और उत्पादकों को निजी क्षेत्र के अधीन बने रहने का अधिकार था। हालांकि राज्य सरकार के परामर्श से इन उद्योगों पर केन्द्र सरकार का सामान्य नियंत्रण था।

4. अन्य उद्योग –

जो उद्योग उपर्युक्त तीन श्रेणी में शामिल नहीं थे, उन्हें निजी क्षेत्र के लिये छोड़ दिया गया था। यह उद्योग निजी और सहकारी क्षेत्र द्वारा नियंत्रित थे।

(ब) औद्योगिक नीति संकल्प, 1956 –

वर्ष 1956 में देश में औद्योगिक नीति संकल्प– 1956 जारी किया गया था। इस संकल्प में सार्वजनिक क्षेत्र के लिये आरक्षित उद्योगों की सूची को 14 उद्योगों को शामिल करने के लिये

विस्तरित किया गया था। इस संकल्प में नये प्रतिष्ठान केवल राज्य द्वारा स्थापित किये जाने थे। औद्योगिक नोति संकल्प– 1956 को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया था –

1. अनुसूची 'अ'–

इसमें 17 उद्योग शामिल थे, जो राज्य की जिम्मेदारी पर थे। इन 17 उद्योगों में से 4 उद्योग – हथियार, गोला बारूद, परमाणु ऊर्जा और रेल तथा हवाई परिवहन पर केन्द्र सरकार का एकाधिकार था। शेष उद्योगों में राज्य सरकारों द्वारा इकाइयां विकसित की गई थी।

2. अनुसूची 'ब'–

ठस सूची में 12 ऐसे उद्योगों को किया गया था, जो निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों के लिये खुले हुए थे।

3. अनुसूची 'स'–

जो उद्योग उपर्युक्त दोनों श्रेणी में शामिल नहीं थे, उन्हें निजी क्षेत्र के लिये छोड़ दिया गया था। हालांकि औद्योगिक उत्पादन का अधिकार राज्यों ने अपने पास सुरक्षित रखा था।

(स) औद्योगिक नीति 1977 –

इस नीति का मुख्य लक्ष्य कुटीर और लघु उद्योगों को प्रभवशाली तरीके से बढ़ावा देना था। इस नीति के प्रमुख तथ्य निम्न थे –

1. इसके अंतर्गत लघु क्षेत्र को तीन समहों – कुटीर एवं लघु क्षेत्र, लघु क्षेत्र तथा लघु उद्याग मे ंवर्गीकृत किया गया था।
2. इस नीति में बड़े पैमाने के औद्योगिक क्षेत्र के लिये अलग–अलग उद्योग निर्धारित किये गये– बुनियादी उद्योग, पूंजीगत सामान उद्योग, उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग आदि।
3. लघु उद्योग क्षेत्र के लिये आरक्षित वस्तुओं की सूची से बाहर के अन्य उद्योग शामिल किये गये।
4. इस नीति ने बाजार में एकाधिकार की स्थिति को रोकने के लिये बड़े उद्योगों के दायरे को सीमित कर दिया था।

(द) औद्योगिक नीति, 1980 –

इस औद्योगिक नीति में औद्योगिक उत्पादन की प्रवृत्ति को पलटने और एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथा अधिनियम (एमआरटीपी एक्ट) तथा विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (फेरा) में अपने विश्वास की पुष्टि करने की मांग की थी।

(इ) औद्योगिक नीति 1991 –

वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति इस नीति के लागू होने के पश्चात् देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से सकारात्मक परिवर्तन होना प्रारंभ हुआ। इस नीति के निम्न उद्देश्य थे –

1. औद्योगिक लाइसेंस
2. सार्वजनिक क्षेत्र का विनिवेश
3. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि
4. भारत में विदेशी प्रौद्योगिकी का आगमन
5. बुनियादी ढ़ांचे में सार्वजनिक निवेश बढ़ाना

वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति की चुनौतियां –

वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति के लागू होने के पश्चात् इस नीति के कार्यान्वयन में भी कई चुनौतियां विद्यमान रहीं, जिनका संक्षिप्त विश्लेषण निम्नानुसार है –

(1) वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति में असंगतता दृष्टिगोचर हाती है, क्योंकि परम्परागत औद्योगिक विकास पर ध्यान नहीं दिये जाने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान समाज से सेवाओं द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था की ओर परिवर्तित हो रही है। इसे 'मिसिंग मिडिल' घटना के रूप में जाना जाता है, जहॉ बड़े पैमाने पर श्रम को अवशोषित करने की क्षमता के साथ विनिर्माण क्षत्र में वृद्धि लगभग न के बराबर है।

(2) इस नीति के दौरान अतिरिक्त नौकरियां केवल आईटी क्षेत्र में, अत्यधिक कुशल सेवा संचालित क्षेत्रों में अथवा बहुत कम उत्पादक कृषि और निर्माण सम्बंधित क्षेत्रों में केन्द्रित हो रही हैं।

(3) वर्ष 1970 के पश्चात् से ही पूर्वी एशियाई देशों में विनिर्माण से सम्बंधित महत्वपूर्ण विविधीकरण के बावजूद भी भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान लगभग 16 प्रतिशत बना हुआ है।

(4) राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2011–12 में सभी श्रमिकों में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान 12.5 प्रतिशत था, जो कि वर्ष 2021–22 में घटकर 11.6 प्रतिशत हो गया था।

(5) सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनामी के अनुसार अप्रैल 2023 में भारत में बेरोजगारी दर बढ़कर 8.11 प्रतिशत हो गई है। इस स्थिति में देश की समग्र अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने और वैश्विक स्तर पर पिछड़ने की संभावना है।

(6) इसके अतिरिक्त भारत में 80 प्रतिशत से भी अधिक कार्यबल अनौपचारिक क्षेत्र में संलग्न है, कुशल कर्मचारियों की भारी कमी है तथा स्वचालन में वृद्धि होने से कार्यबल में कमी की पूर्ण संभावनाा है, जिससे बेरोजगारी दर में और भी अधिक वृद्धि हो सकती है।

(7) भारतीय उपभोक्ताओं ने विकसित अर्थव्यवस्थाओं में अपनाये जाने वाले संगठित खुदरा मॉडल को महत्व न देकर स्थानीय स्टोर या ऑन लाइन प्लेटफॉर्म का विकल्प चुना है। यह स्थिति विनिर्माण और लॉजिस्टिक क्षेत्र में निवेश को हतोत्साहित कर सकती है, जिससे विनिर्माण क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(8) निजी संगठन भी बढ़ते स्वचालन और तकनीकी प्रगति के कारण ई–कॉमर्स में श्रम को अवशोषित करने की क्षमता रखता है, जिससे भारत में 10 मिलियन नौकरियों पर खतरा हो सकता है।

(9) विकास के रथ पर सवार भारतीय अर्थव्यवस्था ने महत्वपूर्ण विकासात्मक चरणों को छोड़कर खुदरा, विनिर्माण, जीविका, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आवास सहित विभिन्न क्षेत्रों में असंतुलन और विभाजन स्थापित कर दिया है।

(10) ग्लोबल हंगर इंडेक्स, 2023 में भारत 125 देशों में से 111वें स्थान पर है, जबकि भारत के पड़ोसी पाकिस्तान (102), बांग्लादेश (81), नेपाल (69) और श्रीलंका (60) स्थान पर हैं। उल्लेखनीय है कि भारत इन पड़ोसी देशों की अपेक्षा विश्व पर्यटन स्थल के रूप में तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है, इसके बावजूद यहाँ प्रगति संतोषजनक नहीं है।

(11) उच्च कौशल सेवाओं के विस्तार से औसत आय में वृद्धि की संभावनाएं दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु यह लाभ इन क्षेत्रों में संलग्न प्रत्यक्ष श्रमिकों के बीच केन्द्रित है, जिससे उच्च कौशल सेवाओं में उच्च वृद्धि वाले राज्यों में असमानता में वृद्धि देखी जा सकती है।

भारत की नवीन औद्योगिक नीति 2023 –

भारत की नवीन औद्योगिक नीति 2023 के निर्माण में देश की 'मेक इन इंडिया' नीति को प्रोत्साहित करती है। भारत में कोविड–19 महामारी के कारण आर्थिक गतिविधियों में व्यवधान उत्पन्न हुआ तथा आपूर्ति श्रंखला भी बाधित हुई, जिसके कारण इस नीति में कुछ और सुधारों अथवा प्रयासों की आवश्यकता तथा कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों की संभावना ने इसके कार्यान्वयन पर रोक लगा दी गई है। इस नीति के संभावित उद्देश्य निम्न हैं –

1. राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को तीव्र करना।
2. औद्योगिक क्षेत्र को लचीलापन प्रदान करने के लिये तंत्र तैयार करना।

नवीन औद्योगिक नीति 2023 के मसौदे में सुधार से सम्बंधित कुछ सुझाव –

1. कम लागत में वित्त प्रदान करने के लिये एक विकास वित्त संस्थान की स्थापना होनी चाहिये। इसके लिये भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग किया जा सकता है।

2. उन्नत प्रौद्योगिकी क्षत्र में कार्यरत कम्पनियों को प्रोत्साहित करने के लिये एक प्रौद्योगिकी कोष की स्थापना की जानी चाहिये।
3. देश में गुणवत्ता पूर्ण उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये।
4. ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में स्टार्ट–अप को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।
5. स्थानीय एवं शहरी निकायो ंमें नवाचार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

निष्कर्ष –

केन्द्रीय वाणिज्य मंत्रालय ने भारत की नवीन औद्योगिक नीति 2023, ''मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड'' को केन्द्र में रखकर तैयार की जा रही थी, के कार्यान्वयन को फिलहाल रोक दिया है। इस नीति का उद्देश्य वर्ष 1991 की औद्योगिक नीति को बदलना तथा एक नवीन और प्रतिस्पर्धी पारिस्थिति तंत्र को प्रोत्साहित करते हुए नीतिगत उपायों के माध्यम से देश के उद्योगों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना है। भारत की प्रचुर श्रम शक्ति के लिये उत्पादक रोजगार के अवसरों के निर्माण को सुविधाजनक बनाने के लिये भी एक नवीन औद्योगिक नीति की आवश्यकता प्रतीत होती है। भारत की नवीन औद्योगिक नीति के लागू हो जाने के पश्चात् देश के अर्थव्यवस्था के विकास को और गति मिल सकेगी।

संदर्भ –

1. वार्षिक प्रतिवेदन, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार, 2022–23
2. ग्लोबल हंगर इंडेक्स, 2023
3. सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनामी, 2023
4. वार्षिक प्रतिवेदन, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 2021–22
5. द हिन्दू – राष्ट्रीय समाचार पत्र
6. हिन्दुस्तान टाइम्स, राष्ट्रीय समाचार पत्र